आपके जन्मदिवस पर

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया

वन्दनवारों से सजी आज,
वीथी में धूम तुम्हारी है।।
मंगलकारी हो जन्मदिवस,
ऐसी अभिलाष हमारी है।।

दिनरात चौगुनी बढ़ती हो,
सम्मान तुम्हारे साथ चलें।
बरसात खुशी की हो ऐसी,
पथ से दुख भागें हाथ मलें।।

जीवन फूलों सा महक उठे,
सम्पदा विभा से भरी रहे।
सूरज सा दमके मुखमण्डल,
मुस्कान अधर पर धरी रहे।।

अनुराग भावना से पूरित,
गा रहा गीत परिवारी है।
मंगलकारी हो जन्मदिवस,
ऐसी अभिलाष हमारी है।।

हर बार सफलता मिले तुम्हें,
असफलता नाम निशान न हो।
अकलंक कीर्ति फैले जग में,
व्याकुलता रोग थकान न हो।।

पुरखों की कृपा रहे तुम पर,
आशीष बुजुर्गों के बरसें।
वरदान देवता देने को ,
घर परआएँ चलकर हरसें।।

हर युग तुम पर अभिमान करे,
इच्छित जीवन की पारी है।
मंगलकारी हो जन्म दिवस,
ऐसी अभिलाष हमारी है।।

पा आयु विजय आकाश छुओ,
अपने कुल का यश धाम करो।
चन्दा - सूरज हों मगन देख,
गुरुओं का जग में नाम करो।।

आनन्द लुटाती नदी बनो,
खुशियों से भरे किनारे हों।
हो जन्म सार्थक और सफल,
पूरे अरमान तुम्हारे हों ।।

हो उम्र हजारी हृष्ट - पुष्ट ,
कामना "प्राण" की भारी है।
मंगलकारी हो जन्मदिवस,
ऐसी अभिलाष हमारी है।।

प्राण का पद

सन्तो! दुनिया खेल तमाशा।

सच में दुनिया रंग-मंच है, झूठ न रत्ती-माशा।
खेल रहे हैं खाल ओढ़ कर नर नाहर की राशा*।।

चौपालों में चौसर खेली, फैंका हर दिन पाशा।
जीत गया वह खुशी ले गया, हारा हुआ हताशा।।

संग हुआ तो घुले प्रेम में, जैसे दूध बताशा।
नेक नाम रह गया जगत में, बोली तुरही-ताशा।।

कहीं किसी की अनबन ऐसी, बढ़ती गई हताशा।
बँधी बैर की गाँठ ले गए, टूटी नहीं दुराशा।।

शिल्पकार की चली छैनियाँ, लगा कि पर्वत नाशा।
सच्चे मन से जग ने पूजा, पत्थर गया तराशा।।

कोई घिरा निराशा में है, कहीं दिख रही आशा।
क्षणिक ज़िन्दगी के हैं नाटक, देते हमें दिलाशा।।

नाटक कर जो गया आज तक, किसने किसे तलाशा।
तू भी "प्राण" ध्यान से सुन यह दुनिया खेल तमाशा।।

सन्तो! दुनिया खेल तमाशा।।

राशा=हिरण

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"